कॉम्प्रोमाइज करने से इनकार किया तो प्रड्यूसर ने फिल्म से आउट कर दिया: मंजरी फडनिस

रोक सको तो तो रोक लो, जाने तू या जाने न और ग्रैंड मस्ती जैसी कई अन्य फिल्मों में मुख्य भूमिका निभा चुकीं अभिनेत्री मंजरी फडनिस ने बॉलिवुड में डेढ़ दशक पूरे कर लिए हैं। इन 15 सालों में मंजरी ने हिंदी के अलावा तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं की फिल्मों में भी काम किया है। इन दिनों मंजरी भारत के 50 वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में अपनी इंटरनैशनल फिल्म इंटरडिपेंडेंस के प्रीमियर के लिए गोवा के पणजी में आई हैं।

इफ्फी 2019 में वह अपनी फिल्म के प्रमोशन में जुटी हैं, इसी दौरान हुई हमसे खास बातचीत में मंजरी ने अपने 15 साल के करियर पर बात करते हुए बताया कि कैसे कई बड़े निर्माताओं द्वारा जब काम के बदले कॉम्प्रोमाइज करने की बात की तब उन्होंने अपनी काबिलियत पर भरोसा जताते हुए, बड़े निर्देशकों और बड़े स्टार्स की फिल्मों से चुपचाप किनारा कर लिया।

डायरेक्टर प्रड्यूसर से कॉम्प्रोमाइज के लिए साफ-साफ न कहने की वजह से मंजरी बिग बजट की कमर्शल फिल्मों से दूर हो गईं और जिन छोटे बजट की फिल्मों को उन्होंने चुना, वह लगातार बॉक्स ऑफिस में फ्लॉप होने लगी। ऐसे में लंबे समय तक वह डिप्रेशन में भी रहीं।

इंटरनैशनल प्रॉजेक्ट के साथ आई हूं इफ्फी में

मैं या मेरी कोई फिल्म पहली बार किसी फिल्म समारोह में आई है। इस बार मैं अपनी फिल्म इंटरडिपेंडेंस की टीम के साथ इफ्फी 2019 में आई हूं। हमारी फिल्म का यहां एशिया प्रीमियर हो रहा है। हमारी इस फिल्म को युनाइटड नेशन ने प्रड्यूज किया है। इस फिल्म को आर्ट ऑफ द वर्ल्ड फाउंडेशन द्वारा प्रजेंट किया जा रहा है। हमारी इस एक फिल्म में देश-दुनिया के 11 निर्देशकों की शार्ट फिल्म को शामिल किया गया है। हमारी फिल्म 11 मिनट की है, सभी 11 निर्देशकों की फिल्मों का विषय पर्यावरण और प्रदूषण पर बेस्ड है। हमारी फिल्म का निर्देशन नीला माधब पंडा ने किया है। हमारी फिल्म का नाम है मेघा डाइवोर्स, फिल्म में मेरे अलावा दिव्या दत्ता, तनिष्ठा चटर्जी और चन्दन आनंद अहम भूमिका में हैं।

स्टारडम, बड़ी फिल्म-छोटी फिल्म, यह सब परसेप्शन है

मैं कहीं खोई नहीं हूं, यहीं इंडस्ट्री में ही हूं, जब आप आउटसाइडर होते हैं तो फिल्म इंडस्ट्री में अपनी जगह बनाना आसान नहीं होता है। मेरे पिता आर्मी में थे, फिल्म इंडस्ट्री से कोई नाता नहीं था, कोई कॉन्टैक्ट नहीं था, ऐसे में मैं अपनी अब तक की जर्नी से संतुष्ट हूं। मेरी पहली फिल्म रोक सको तो रोक लो ने बहुत ज्यादा अच्छा बिजनस नहीं किया था, इस वजह से मेरा स्ट्रगल और बढ़ गया। मैंने जितना भी काम किया, बेहतरीन लोगों के साथ किया, भले यह जर्नी स्लो रही हो, पर मैं खुश हूं। यह जो स्टारडम, बड़ी फिल्म छोटी फिल्म होती है, यह सब परसेप्शन है। मेरे लिए यही बहुत है कि मैं काम कर रही हूं।

मेरी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नहीं चल रही थी

एक समय था, जब मैं अपने स्ट्रगल से परेशान थी। काम न मिलने और फिल्मों के न चलने के बाद मुझे भी डिप्रेशन हुआ था। हर ऐक्टर की लाइफ में यह समय आता है, चाहे वह अमिताभ बच्चन हो यान शाहरुख खान, जब वह सोचता है कि कुछ ठीक नहीं हो रहा है, ऐसे समय में फ्रस्टेशन और गुस्सा भी आता था। काम न मिलने से बहुत रोना भी आता था, रात-रात भर जागती थी। मेरी फिल्म बॉक्स ऑफिस पर नहीं चल रही थी। लोगों ने मुझे टाइपकास्ट भी कर दिया है। बहुत ज्यादा नकरात्मक ख्याल आने लगे थे। इंडस्ट्री के काम करने के ढंग से भी बड़ी दिक्कत होती थी।

अब मैंने अपना नजरिया बदल लिया है

अब मैंने यह समझ लिया है कि जो हो रहा है, उससे लड़ा नहीं जा सकता है। आप खुश रहेंगे तो सब अच्छा होगा। मेरी परवरिश आर्मी स्टाइल में हुई है, काम न मिलना जैसी बातों को डील करना आता है मुझे। मैंने बहुत लंबे समय तक अच्छे काम का इंतजार किया। कई बार यह सोच कर खुश हो जाती हूं कि आउटसाइडर होने के बाद भी इतना काम मिलना बड़ी बात है। मुझे कोई हक नहीं बनता नेगेटिव होने का। अब मैंने अपने देखने का नजरिया बदल गया है।

बॉलिवुड में कॉम्प्रोमाइज होता है, लेकिन जबरदस्ती नहीं

बॉलिवुड में काम के लिए कॉम्प्रोमाइज भी होता है, मेरे सामने जब भी कोई ऐसी सिचुवेशन आई मैंने साइन की हुई कई फिल्में छोड़ दीं। कॉम्प्रोमाइज के मामले में मेरे साथ जो भी अनुभव रहे हैं, वह हार्मलेस थे। जब भी मेरे सामने ऐसी कोई बकवास शर्त रखी गई, तब हमेशा मुझे न कहना आया। जिस तरह यह बॉलिवुड की सच्चाई है कि कॉम्प्रोमाइज होता है, उसी तरह यह भी सच है कि फिल्म इंडस्ट्री में आपकी सहमति के बिना कोई आगे नहीं बढ़ता है।

उन्होंने मुझे कॉम्प्रोमाइज के लिए अप्रोच करना शुरू कर दिया

मैं दूसरों के बारे में तो नहीं जानती, लेकिन मेरे पास हमेशा न कहने की चॉइस थी। कभी किसी ने मेरे साथ जबरदस्ती नहीं की। अगर मुझे कॉम्प्रोमाइज के रास्ते में नहीं जाना तो कोई भी कभी भी मुझे या किसी भी लड़की को फोर्स नहीं कर सकता है। नो कह कर ऐसी स्थति से आसानी से बाहर निकला जा सकता है। मैं इसी बॉलिवुड के कई नामचीन लोगों को जानती हूं, जिन्होंने मुझे एक बड़ी फिल्म में साइन कर लिया था। फिल्म साइन करने के बाद मुझे भी पता था कि इस फिल्म से मेरी किस्मत बदल जाएगी। फिल्म साइन करने के बाद उन्होंने मुझे कॉम्प्रोमाइज के लिए अप्रोच करना शुरू कर दिया, जब मैंने उन्हें पहले बहाने से और बाद में साफ-साफ न कहा तो मुझे फिल्म से निकाल दिया गया। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा, मुझे अपनी शर्तों पर ही काम करना था। मैं बॉलिवुड में जो भी और जैसे भी हूं, अपनी शर्तों पर हूं। इस इंडस्ट्री में बेहतरीन लोग भी हैं।

मेरे बारे में कहा जाता है कि वह कॉप्रोमाइज के लिए तैयार नहीं

मैं जब भी किसी फिल्म के लिए किसी निर्देशक-निर्माता से मिलती हूं तो उन्हें मुझसे बात करने के बाद समझ आ जाता है कि मैं उस टाइप की लड़की नहीं हूं। मेरे बारे में ऐसा कहा जाता है कि वह कॉप्रोमाइज के लिए तैयार नहीं है। मैं काम के बदले में कॉम्प्रोमाइज की बात को कैसे टेकल करना है, यह अच्छी तरह जानती हूं।

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

निर्माता ने पूछा बड़ी फिल्म में कास्ट किया तो उन्हें क्या मिलेगा

वैसे तो कॉप्रोमाइज के मामले की बात लोग खुलकर नहीं पूछते, लेकिन एक बार साउथ फिल्म इंडस्ट्री के एक निर्माता ने मुझसे पूछा कि वह मुझे अपनी बड़ी फिल्म में कास्ट करेंगे तो बदले में उन्हें क्या मिलेगा। मैंने उन्हें बड़ी ही समझदारी से जवाब दिया कि मैं फिल्म के लिए बहुत कड़ी मेहनत करूंगी। वह बातचीत बहुत फनी थी। आज यह बातें बताना आसान है, लेकिन जब यह सब बातें किसी भी लड़की के साथ होती हैं, तो वह एक अलग तरह के मेंटल ट्रॉमा में चली जाती है। अगर कॉम्प्रोमाइज की बातों को कोई हिरोइन मीडिया में बोल देती है तो उसके लिए तमाम बड़-बड़े निर्देशकों के दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो जाते हैं। लड़कियां बहुत ज्यादा स्मार्ट होती हैं, मुझे लगता नहीं कि उनको बहुत ज्यादा कुछ समझाने की जरूरत होती है। वह सामने वाले के आव-भाव से ताड़ लेती हैं कि उसके मन में क्या है और हर लड़की इस तरह के मामलों को अपने ढंग से हैंडल भी कर लेती हैं।